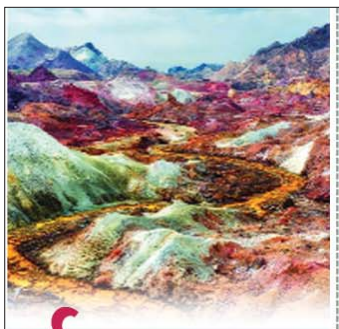

ईरान का होर्मोज द्वीप

मसालों की तरह खाई जाती है यहां की मिट्टी

बचपन में जब हम मिट्टी खाते थे, तो घरवालों से खूब डांट पड़ती थी. बोनस में ताने में मिलते थे वो अलग. खैर, बड़े होकर समझ आया है कि मिट्टी खाना हेल्थ के लिये अच्छा नहीं होता है. पर अब पता चला है कि दुनिया का एक हिस्सा ऐसा भी है जहां मिट्टी को मिट्टी की तरह नहीं, बल्कि मसाले की तरह खाया जाता है. सुनने में अजीब लगा न, लेकिन ये बात सौ प्रतिशत सत्य है.

ईरान के होर्मोज द्वीप यानि रेनबो द्वीप की मिट्टी का प्रयोग मसाले के तौर पर किया जाता है. ये दुनिया का एकमात्र द्वीप है, जहां का पहाड़ खाने योग्य है. स्थानीय लोग पहाड़ की लाल मिट्टी को सॉस की तरह ब्रेड या अन्य चीज़ के साथ लगा कर चाव से खाते हैं. यही नहीं, यहां आने वाले हर टूरिस्ट को मिट्टी खाने की सलाह भी दी जाती है. हांलाकि, बहुत कम लोग हैं जिन्हें इस द्वीप की जानकारी है.

पहाड़ों की मिट्टी की ख़ासियत

जानकारी के मुताबिक, द्वीप के पहाड़ों की मिट्टी को 'गौलैक मिट्टी' कहा जाता है. जिसे हम सभी 'लाल मिट्टी' के नाम से जानते हैं. कहा जाता है कि ये मिट्टी हीमैटाइट नामक लौह अयस्क से तैयारी होती है. जो आग्नेय चट्टानों से मिल कर बनी होती है. इसी ख़ासियत की वजह से ये मिट्टी व्यापार के साथ-साथ खाने के काम भी आती है. कहते हैं कि यहां पर होर्मोज के पश्चिम में कई नमक पहाड़ भी मौजूद हैं, जो कि सेहत के लिये काफ़ी फ़ायदेमंद होता है. अफ़सोस की बात ये है कि बहुत कम लोग हैं, जो दुनिया की इस खूबसूरत जगह के बारे में जानते हैं. हांलाकि, स्थानीय लोग यहां के लोग पर्यटन को बढ़ावा देने की कोशिश में लगे हैं. उम्मीद है कि वो अपने मक़सद में जल्द ही कामयाब होंगे.

दुनिया की सबसे लंबी कार 'अमेरिकन ड्रीम'

अब तक आपने दुनिया की सबसे लंबी नदी, दुनिया की सबसे ऊंची चोटी, दुनिया की सबसे ऊंची बिल्डिंग और दुनिया के सबसे लंबे इंसान आदि के बारे में पढ़ा और सुना होगा, लेकिन क्या आपने कभी दुनिया की सबसे लंबी कार के बारे में सुना है? नहीं न! तो चलिए हम बताते हैं कि आख़िर मामला है क्या!

दुनिया की सबसे लंबी कार

आज हम आपको एक ऐसी कार के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसने दुनिया की सबसे लंबी कार का 'वर्ल्ड रिकॉर्ड' बनाया है. इसका नाम 'गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में दर्ज है. इस कार को सन 1986 में अमेरिका के कैलिफ़ोर्निया में रहने वाले जे. ओहरबर्ग ने डिज़ाइन की थी. इस 'कैडिलैक लिमोजिन' कार को 'अमेरिकन ड्रीम' के नाम से भी जाना जाता था. इस कार की ख़ासियत जानकर आप हैरान रह जायेंगे. अब तक आपने किसी भी लग्ज़री कार में DJ साउंड म्यूज़िक सिस्टम, मिनी कसीनो और मिनी बार आदि के बारे में सुना होगा, लेकिन इस कार में इससे भी बेहतरीन सुविधाएं मौजूद हैं. 'अमेरिकन ड्रीम' के नाम से मशहूर इस कार में 'स्विमिंग पूल' से लेकर 'हैलिपेड' तक सब कुछ है. ये कार सचमुच में किसी सपने की तरह है. हम जैसे आम लोग तो सपने में भी नहीं सोच सकते हैं कि किसी कार में ये सब कुछ देखने को मिलेगा.

इस कार में क्या ख़ास बात है?

'अमेरिकन ड्रीम' कार की लंबाई 100 मीटर है. ये कार 26 व्हील के सहारे चलती है. इसमें ड्राइविंग के लिए दो केबिन हैं, इसलिए इसे आगे और पीछे दोनों साइड से चलाया जा सकता है. इस कार में मिनी बार, मिनी कसीनो, मिनी किचन, बाथरूम, ज़कूज़ी, बेडरूम, स्विमिंग पूल व हैलिपेड भी हैं. इसके अलावा इसमें धूप सेकने के लिए 'सन डेक' भी मौजूद है.

इस कार को देखकर लोगों की आंखें खुली की खुली रह जाती हैं. ये इतनी लंबी है कि इसके अंदर एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाने में ही लोग थक जाते हैं. जे. ओहरबर्ग ने ये कार ख़ासतौर पर फ़िल्मों और प्रदर्शनी के लिए डिज़ाइन की थी. हॉलीवुड की कई फ़िल्मों में इसका इस्तेमाल भी किया गया है.

कई हॉलीवुड स्टार्स इसकी सवारी कर चुके हैं. इस कार को डिज़ाइन करने वाले ओहरबर्ग के पास कैलिफ़ोर्निया में लग्ज़री कार और उनकी रेप्लिका का एक विशाल संग्रह है. ओहरबर्ग की कंपनी 'जे ओहरबर्ग स्टार कार्स' फ़िल्मों और टीवी शो के लिए इन कारों को रेंट पर देते हैं. बता दें कि ये कार किराये की टैक्सी के रूप में भी चलाई गई थी.

इस दौरान इसका किराया 50 से 200 यूएस डॉलर प्रति घंटा हुआ करता था. इस कार की सवारी का मौका ख़ास से लेकर आम लोगों को मिला. आज भी अमेरिकी लोगों के दिलों में इस कार की यादें बसती हैं.

आज जर्जर हालत में है 'अमेरिकन ड्रीम'

'अमेरिकन ड्रीम' कार किसी ज़माने में एक चलता-फिरता आलीशान घर हुआ करती थी, जहां एश-ओ-आराम की सारी चीज़ें मौजूद थी. हालांकि, मौजूदा दौर में रख-रखाव न होने के कारण इसकी हालत ख़राब और ये कार लंबे समय से न्यूजर्सी के एक गोदाम में सड़ रही है. जर्जर हालत में पहुंच चुकी इस कार की खिड़कियां और छत पूरी तरह से टूट चुकी हैं. मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो इस ऐतिहासिक कार को फिर से नया लुक दिए जाने की बात की जा रही है.

वो खूबसूरत द्वीप ...जो वीरान हो गया

आजकल लोग शांति की तलाश में अक्सर आइलैंड्स की ओर निकल जाते हैं, खासतौर पर जो मुख्यधारा से थोड़ा कटे हुए हों. एक ऐसा ही द्वीप है, जो खूबसूरत तो है लेकिन यहां कोई जा नहीं सकता.

बीच और आइलैंड का नाम सुनते ही हममें से बहुत से लोगों के चेहरे पर चमक आ जाती है. आख़िर किसे समुद्र का किनारा और दूर-दूर तक फैला हुआ पानी पसंद नहीं होगा. लोग ऐसी जगहों की तलाश में रहते हैं, जहां शांत और सुंदर समंदर के किनारे हो. एक ऐसा ही द्वीप है, जो खूबसूरत तो है लेकिन यहां कोई जा नहीं सकता. इसके पीछे की वजह भी काफ़ी दिलचस्प है. रिपोर्ट के मुताबिक स्कॉटलैंड में एक ऐसा ही रिमोट आइलैंड है, जो बिल्कुल वीरान है. स्कॉटलैंड कोस्ट से एक किलोमीटर की दूरी पर मौजूद इस जगह को देखकर आप मोहित हो सकते हैं लेकिन यहां जा नहीं सकते. 1940 के दशक के बाद से यहां कभी कोई इंसान नहीं गया या फिर यूं कहें कि टिक ही नहीं सका. चलिए जानते हैं इस अनोखे द्वीप की कहानी.

1442 के बाद 'शापित' हुआ आइलैंड!

इस द्वीप का नाम Gruinard है. इस आइलैंड के शापित होने की कहानी द्वितीय विश्वयुद्ध से जुड़ी हुई है. उस दौरान ब्रिटिश राजनेता चर्चिल को आशंका थी कि जर्मनी कोई बायोकेमिकल वेपन बना रहा है. ऐसे में उन्होंने अपने वैज्ञानिकों को ऐसा ही एक वेपन बनाने के आदेश दिए, जिसे वक्त आने पर इस्तेमाल किया जा सके. ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने एंथ्रॉक्स नाम का वेपन बनाया, जिसकी टेस्टिक Gruinard आइलैंड पर हुई. यही वजह है कि यहां की मिट्टी में इस खतरनाक बीमारी के बैक्टीरिया समाए हुए हैं, जिसके संपर्क में आने से इंसान बीमार हो सकता है.

भेड़ें यहां पहुंचीं, वो भी मर गईं!

आइलैंड के मालिकों की अनुमति से यहां एंथ्रॉक्स बमों का परीक्षण हुआ था. इसका परीक्षण भी भेड़ों के झुंड को यहां रखकर किया गया. बम फटने के बाद धीरे-धीरे भेड़ें मर गईं और उनके शव जल गए. इसी के बाद यहां की मिट्टी ज़हरीली हो गई. हालांकि इन बमों का इस्तेमाल जर्मनी पर नहीं हुआ लेकिन साल 1981 में यहां की ज़हरीली मिट्टी को लेकर रिपोर्ट्स आने लगीं. जब इसकी टेस्टिंग हुई, तो पता चला कि अब भी आइलैंड की मिट्टी बायोवेपन के ज़हर से मुक्त नहीं हुई है. इसे साफ करने की भी कोशिशें सरकार की ओर से की गईं. यहां के सारे समुद्री जीवों को मार दिया गया और मिट्टी को साफ किया गया.

कोई कोशिश नहीं हुई सफल

साल 2007 में एक बार फिर से इस जगह समुद्री जीवों को विकसित किया जाने लगा लेकिन ये प्रयोग सफल नहीं रहा. हालांकि बाद में भेड़ों का एक झुंड यहां लाया गया, जो ज़िंदा भी रह गए. वो बात अलग है कि साल 2022 में एक बार फिर यहां भीषण आग लगी, ये आग इतनी भयानक थी कि इसे नरक की आग तक कहा गया. बाद में द्वीप के ओनर की ओर से कहा गया कि जंगल की आग आइलैंड के लिए फायदेमंद रही. इतने के बाद भी आइलैंड पर बसने वाला कोई नहीं है.

चीन का कुंग-फू विलेज गांक्सी डोंग

जहां बच्चे से लेकर बूढ़े तक हैं कुंग-फू के उस्ताद

चीन के तिआंझु में एक गांव को कुंग-फू विलेज के नाम से जाना जाता है. इस गांव में शायद ही कोई ऐसा हो जिसे कुंग-फू न आता हो. अपने इस अनोखे हुनर की वजह से दुनियाभर में मशहूर हैं. दुनियाभर से लोग यहां आते हैं और गांव के लोगों से मिलते हैं. बहुत से लोग, जो कुंग-फू सीखना चाहते हैं, वो इसे सीखते भी हैं.

इस गांव का नाम गांक्सी डोंग है. ये आत्मनिर्भर गांव डोंग लोगों का घर है, जो चीन में 56 मान्यता प्राप्त जातीय अल्पसंख्यकों में से एक हैं. इस गांव में बच्चे से लेकर बूढ़े तक कुंग-फू के मास्टर हैं. यही वजह कि ये गांव दुनियाभर में फ़ेमस हो गया है. लोग अब इस गांव को कुंग-फू विलेज बुलाने लगे हैं. गांव में लोग अपने खेतों, घरों से लेकर मंदिर तक में कुंग-फ़ू का हर रोज़ अभ्यास करते हैं. यहां अलग-अलग शैलियों में इसकी प्रैक्टिस की जाती है. अपने हुनर में लगातार निखार लाने के लिए ये लोग एक-दूसरे लड़ते भी हैं. इस गांव में कुंग-फू की प्रैक्टिस का इतिहास काफ़ी पुराना है. हालांकि, ये मार्शल आर्ट यहां कबसे लोकप्रिय हुई, इसकी ठीक जानकारी किसी को नहीं है.

ये लोग हाथ-पैरों के साथ ही लाठी और तलवारों का भी इस्तेमाल करते हैं. इनके मूव्स ड्रेगन, सांप, बाघ और तेंदुए जैसे जानवरों से प्रेरित होते हैं. ये लोग एक-दूसरे को सिखाते भी हैं. यहां सभी के लिए कुंग-फू सीखना ज़रूरी है. इसमें लड़कियां भी अपवाद नही हैं. उनसे भी यही अपेक्षा रहती है कि वो कुंग-फू की किसी भी शैली में एक्सपर्ट बनें. ये स्पष्ट नहीं है कि वे कैसे तय करते हैं कि कौन सी कुंग फ़ू शैली सीखनी है, क्योंकि शुरुआत से ही गांव में कई अलग-अलग शैलियों का अभ्यास किया जाता है. कुंग-फ़ू की अलग-अलग शैलियां इस गांव में कैसे विकसित हुईं, इसे लेकर अलग-अलग थ्योरी हैं.

कुछ का दावा है कि पहले के समय में जंगली जानवरों के हमलों से खुद को और अपने पशुओं को बचाने के लिए छह परिवारों ने मार्शल आर्ट सीखी. उन्होंने ड्रेगन, सांप, बाघ और तेंदुओं की चाल के मुताबिक़ अपने मूव्स तैयार किए. हर परिवार ने अलग-अलग स्टाइल का कुंग-फ़ू सीखा और फिर उसकी ट्रेनिंग जारी रखी. वहीं, एक दूसरी थ्योरी ये है कि जब शुरुआत में लोग इस गांव में बसे, तो पड़ोसी गांव से लूटपाट के लिए हमले होते थे. खुद को बचाने के लिए ग्रामीणों ने दो मार्शल आर्ट एक्सपर्ट्स को बुलाया और उनसे ट्रेनिंग ली. फिर उन्होंने बाकी गांव वालों को भी ये हुनर सिखाया. हालांकि, ये सीखने-सिखाने की ये परंपरा काफ़ी लंबे वक़्त से चली आ रही है. ऐसे में इसकी शुरुआत की कोई सटीक थ्योरी अब तक सामने नहीं आई है. इन सबसे बीच एक बात जो यक़ीन के साथ कही जा सकती है, वो ये है कि गांव वालों के लिए खेती के बाद सबसे महत्वपूर्ण चीज़ कुंग-फू ही है. सदियों से चली आ रही इस परंपरा को वो आज भी पूरे मन के साथ फ़ॉलो कर रहे हैं और अगली पीढ़ी तक भी पहुंचा रहे हैं.